भारत में तुर्क सत्ता की स्थापना

कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश

भाग - 2

B. A - III (Hons), History, Paper - V

BY

Dr. Md. Neyaz Hussain
Associate Prof. & Head
PG Dept. of History
Maharaja College,
VKSU, ARA (BIHAR)

Scanned with CamScanner

सन 1206 ई० में भारत में गौरियों के अधीन मुलतान, उच्च, नहरवाला, पुरशोर, सियालकोट, लाहौर तबरहिंद, तराइन, अजमेर, हाँसी सुरसुती, कुहराम, मेरठ, कोल, दिल्ली, धनकिर, बदायूँ, ग्वालियर, मीरा, बनारस, कन्नौज, कालिंजर, अवध, मालवा, बिहार तथा लखनौती शामिल थे। परन्तु इनमें से कुछ जगहों पर उसका नियंत्रण शिथिल पड़ गया था। अतः ऐबक ने नए प्रदेशों को जीतने की अपेक्षा जीते हुए प्रदेशों की सुरक्षा की ओर ध्यान देना आवश्यक समझा। राज्य की अनिश्चित सीमाओं को निश्चित रूप देना और उसके प्रशासनिक संगठन पर ध्यान देना वह अधिक उचित समझता था। यह बहुत जरूरी था कि मुइज़ी अमीर और मलिक उसकी प्रभुसत्ता को मानें। प्रारंभ में उसने यल्दूज और कुबाचा के साथ समझौता करना उचित समझा।

Scanned with CamScanner

भारतवर्ष में ऐबक के जीवन को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है : 1192 ई० से 1206 ई० तक गौरी के प्रतिनिधि के रूप में वह उत्तरी भारत के कुछ भागों का शासक था; 1206 से 1208 ई० तक वह गौरी की भारतीय सल्तनत का मलिक या सिपहसालार था; और 1208 से 1210 ई० तक वह एक स्वतंत्र भारतीय राज्य का औपचारिक अधिकार प्राप्त शासक था। उसके शासन का प्रथम काल सैनिक गतिविधियों से पूर्ण था, दूसरा राजनयिक कार्यों में व्यतीत हुआ और तीसरा दिल्ली सल्तनत का मानचित्र निर्मित करने में। कुतुबुद्दीन ऐबक का राजत्व राजनीतिक विचारों पर आधारित था। विजय और युद्ध उसको प्रेरणा देने वाले राजनीतिक तत्व थे। परन्तु वह केवल लगातार जीत को ही काफी नहीं समझता था।

Scanned with CamScanner

राजनीतिक ढांचे को शक्तिशाली बनाए रखने के लिये आवश्यक था कि जो प्रदेश उसने जीते हैं उन्हें सुरक्षित और संगठित रखा जाए। वह एक कुशल सैनिक था। ग़यासुद्दीन महमूद, यल्दूज और कबाचा के प्रति उसकी नीति उसकी राजनीतिक कुशलता का प्रमाण है। उसने उनके विरुद्ध हर समय शक्ति का प्रदर्शन न कर नर्मी और विनय से ही काम लिया, जो उस समय की अनिश्चित परिस्थिति में महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। हबीबुल्लाह के अनुसार "उसमें तुर्कों की निर्भीकता और फारसियों की परिष्कृत अभिरुचि पाई जाती थी।" उसकी उदारता के कारण उसे 'लाख बख्श' (लाखों का दान करने वाला) कहा गया।

ऐबक ने राजधानी के रूप में दिल्ली नगर का विकास भी किया। उसने

दिल्ली एवं अजमेर में मस्जिदों का निर्माण कराया तथा कुतुबमीनार का निर्माण-कार्य आरंभ कराया जिससे उत्तरी भारत में एक नई स्थापत्य शैली के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसके साथ ही उसने भारत के तुर्क शासक वर्ग के विभिन्न प्रतिनिधियों के बीच एकता और संगठन बनाए रखा। जिससे नव-स्थापित सल्तनत को एक मजबूत आधार मिल सका।

ऐबक की अकस्मात मृत्यु के बाद फिर एक बार उत्तराधिकार की समस्या उठ खड़ी हुई क्योंकि उसका कोई पुत्र नहीं था। कुछ तुर्क सरदारों ने आराम शाह नामक एक नवयुवक को सल्तनत का शासक घोषित कर दिया लेकिन अधिकतर सरदार उसकी सत्ता के विरोधी थे और उसके खिलाफ विद्रोह भड़क उठे। कुछ महीनों के संक्षिप्त शासन के पश्चात आराम शाह को हटाकर इल्तुतमिश ने शासन पर अधिकार कर लिया।

Scanned with CamScanner